उपन्यास-अंश

कृति-का

चैप्टर-2

पेज-17

सूरज चढ़ते-चढ़ते एकदम सिर पर चढ़ गया. सईनी-महामोहिमपुर-राजखरसां वा-चाईबासा को पीछे छोड़कर गुवा पैसंेजर आगे बढ़ गई थी. डोंगापोसी स्टेशन के निकट आने पर कृतिका ने देखा कि नीचे प्लेटफाॅर्मनुमा जगह पर कई लोग एक साथ इकट्ठे खड़े थे- पैंट शर्ट, कमीज पहने लम्बे, छोटे, पतले, मोटे लोग. खाकी हाफपैंट शर्ट के ऊपर सिर पर लाल मुरेठा बाँधे काले-कलूटे, चमकदार आँखों वाले लोग. थोड़ी ही देर में कृतिका जान गई कि वे सभी लोग नए एईएन साहब की अगवानी के लिए आए थे. पीडब्ल्यूआई, आईओडब्ल्यू, बड़ा बाबू, आॅफिस स्टाफ और ट्रालीमैन.

जयंत की अगवानी का यह नजारा खासा दिलचस्प था.

लाल मुरूम वाली सड़क पर से गुजरकर छोटा-सा काफिला पीडब्ल्यूआई के आॅफिस से सटे हुए बंगले तक जा पहुँचा. एईएन के लाल बंगले की भव्य आकृति, छोटी-सी काॅलोनी के बीचों-बीच तनी हुई, दूर खड़ी पहाड़ियों की परछाइयों को मानों आसमान की ओर ठेलती हुई, बड़े शान से खड़ी थी.

सड़क से बाईं ओर मुड़ते ही पुराने एईएन मिस्टर बिश्नोई ने लकड़ी का गेट खोला-

“आइए, आइए न.”

इतने सालों में पहली बार किसी ने ऐसे स्नेह भरे मुलायम स्वर में कृतिका की अगवानी की थी. बुजुर्ग मिस्टर बिश्नोई की सहज स्वाभाविक मुद्रा ने कृति को अभिभूत कर दिया.

सौहार्द और शालीनता के दबाव तले वहाँ खड़े सभी पेड़-पौधे समेत घर की दीवारें तक दमक उठीं, बंगले की छत की तरंगित गोलाइयाँ थी. वे सौंदर्यित क्षण कृतिका के

पेज-18

करीब अपनी पूर्णता में आए. उन्होंने सम्पूर्णता में उसे नजदीक से छुआ. लकड़ी के गेट के पीछे पसरा बगान, मोटे तने वाले पेड़ों से घिरी लाल माटी, बेर और केले के पत्ते अचानक एक साथ आलोकित हो उठे.

लकड़ी के छोटे गेट से लेकर सीधी सड़क उस दूसरे बड़े वाले गेट तक चली गई थी. दाहिनी ओर बंगले और आॅफिस की इमारत कंधे से कंधा मिलाए खड़ी थी. सामने फैली जमीन के करीब मोटे वृक्षों की जड़ें थीं और फूलदार पौधों की झुकी-झुकी टहनियाँ. सभी पेड़ों के बीच मोटे खोढ़र वाला आम का पुराना शानदार वृक्ष मानों अज्ञेय की असाध्य वीणा से निकलकर आया हुआ था. कंधों पर किसी भी समय बादलों को थाम लेने वाला. बीच की जगह में सीमेंट का चबूतरा था जिसे चारों ओर से जूही की लतरों ने घेर रखा था. कुंज वन की सरसराहटें ब्रज से उठकर उस कस्बे तक आ पहुँची थीं.

बड़े वाले गेट पर खड़े होने पर सड़क के पार नीचे बिछी पटरियों की पंक्ति दिखती. ट्रेनें सिर के बीचोंबीच बड़ी-बड़ी रोशनी की मणियाँ सजाए डोंगापोसी में प्रवेश करतीं और दाहिनी ओर बड़ाजामदा की ओर चली जातीं. पटरियों के पार स्थित पहाड़ियाँ ज्यादातर मौसमों में नीली दिखतीं. बंगले के पीछे की लंबी-चैड़ी जगह सब्जियों के मौसम के बाद के समय में मानो समुद्र के किनारे में परिवर्तित हो जाती.

सब्जी उगाने की जगह का अंतिम किनारा मैदान रूपी समुद्र के तट से जा मिलता, जहाँ अमरूद और केले के गहरे हर पत्तों के बीच सहजन और बेर के नन्हे हरेपन की शरमाहट घुल जाया करतीं.
एईएन बंगला वहाँ डोंगापोसी का एकमात्र बंगला था, बड़े साहब का बड़ा बंगला. असिस्टेंट इंजीनियर वहाँ के बड़े साहब थे और पूरी कॉलोनी मानों उनकी तहसील के अन्दर थी. स्टेशन बिल्डिंग, स्कूल की बिल्डिंग, इंस्टिट्यूट की बिल्डिंग और कॉलोनी की एक-एक ईंट.
स्कूल के बड़े मैदान में बिछी मिट्टी की लाल परत दूर से जगमगाती. वहाँ उस मैदान के एक सिरे पर खड़े होने से ऐसा लगता मानों दूसरे छोर पर दो सफेद बैलों की जोड़ी एक साथ उतरकर आएगी. सीधे आसमान से.
कृति पुराने देखे गए स्वप्न को याद करती.

पेज-19

बहुत पहले शरद पूर्णिमा के कुछ दिनों बाद देखे गए उस स्वप्न की अनजानी तहें स्वयं ही सूतों की मानिंद उघड़ने लगतीं. उसके अन्दर धुले पुँछे आसमान पर ललाहट लिए सुनहरे रंगों की परछाईं झिलमिलाती. उस अद्भुत लैंडस्केप के बीचोंबीच ठिठके खड़े श्वेत बैलों की एक जोड़ी का बिम्ब मन को आह्लादित कर जाता.
बरसों पहले देखे गए स्वप्न की गंध वर्तमान समय के ऊपर तैर आती.
कृतिका मानों दूर खड़ी होकर सभी स्वप्नों को एक साथ देखना चाहती.
नए स्वप्नों को जन्म देने की घड़ियों के बीच कृतिका बीत चुके काल को नई दृष्टि से देखती.
वहाँ डोंगापोसी में रहते-रहते मानों कृतिका बड़ी होने लगी.
इतने महीनों तक वह माँ से, भाई-बहनों से, जफरपुर से अलग कभी नहीं रही थी.
एक बड़ी दुनिया कृति अपने पीछे छोड़ आई थी. वहाँ उस दुनिया में उसका कॉलेज, उसका घर, उसकी माँ, उसके भाई-बहन और उसके मुहल्ले का परिवेश परत-दर-परत छाया हुआ था.
उन परतों के बीच खुले हुए आसमान को उसकी विशाल गोलाई में निहारने वाली निश्शंक आँखें थीं. माधवी लता की गहरी हरी पत्तियों वाली बेल थी. उन रूखी सतह वाली पत्तियों के बीच नन्ही कलियों से लदी डाल की एक-एक कली को क्षणाद्ध के बीच खिलते हुए देखते रहने का सुख था.
इस नए संधिकाल में खड़ी कृति को वहाँ का सबसे चमकदान बिन्दु उसके अपने उम्र की परछाईं दिखती और आगे के अनजाने कालखंड उत्सुकता से लदे हुए ऊन के गोले, जिन्हें पूरी लम्बाई तक तह-तह खुलना बाकी था. घृणा से, हिंसा से अभी उसका कोई परिचय नहीं हुआ था. कृति अपने भाग्य के इस अद्भुत पक्ष के बारे में सोचती.
उसे लगता कि वह भाग्यशाली है.

पेज-20

कृति के निकट उसका भाग्य आकर खड़ा हो जाता. कृति उसकी सतहों को ध्यान से परखती. उसकी हथेलियों पर फिसलते वर्षों का स्पर्श टकराता. बीत चुका काल, आने वाले वक्त के निकट निद्र्वन्द्व महाभाव ओढ़कर खड़ा हो जाता.
कृति सारे परिवेश को चुपचाप परखना सीख रही थी.
सुबह उठकर सबसे पहले वह दरवाजे-खिड़कियाँ खोलती, फिर पिछले बरामदे से गुजरकर किचन में जाती. देखती कि चैकीदार दूध लाया या नहीं. वह दूध को छानकर उसे उबालती.
तब तक जाधो आ जाता.

कृतिका किचन से हट जाती.
कई बार परोक्ष-अपरोक्ष रूप से जाधो कृतिका मेमसाहब को समझा चुका था कि उनका किचन में आना उसे जरा भी पसंद नहीं. इतनी छोटी-सी लड़कीनुमा मेमसाहब को जाधो थोड़ी भी तरह देना नहीं चाहता.
इस तत्व के समक्ष में आने के बाद कृति ज्यादातर किचन के बाहर ही रहती. सुबह वह बाहर बगान में चली जाती.
बाहरी बरामदे से उतरकर दाहिनी ओर की तरफ स्थित मोटे तने वाले पेड़े के नीचे, बेंत की कुर्सियाँ और गोल टेबल सजाकर सुबह-सुबह चैकीदार छुट्टी करता. कृति को सुबह की चाय वहाँ पीना पसंद था. जयंत भी उठकर वहीं आ जाते.
अंदर जाधो नाश्ता बनाता, साफ-सफाई करता, बीच-बीच में काम वाली बाई पर रौब झाड़ता-
'सब काम हम ही करेगा की? ओह!'
ल्ेकिन उसकी आवाज की ठनक बताती कि सारा तामझाम उसके पसंद का है. अपनी मर्जी से काम करना उसकी आदत है. उसके द्वारा पूछे जाने पर माँ जी कुछ बोलें तो ठीक, वरना उनका आर्डर चलाना, टोका-टोकी करना उसे बिलकुल पसंद नहीं.

पेज-21
दिसम्बर की खुशनुमा सुबहें ऐसी दिनचर्या के बीच उन दिनों खास रौशन हो उठतीं, जब जयंत लाइन नहीं गए होते, कोई डिरेलमेंट नहीं हुआ रहता और सुबह के बीतने के पश्चात जयंत का आॅफिस जाना तय रहा करता. ऐसे खुशगवार दिनों में जयंत दोपहर के खाने के समय भी कृतिका के साथ होते, शाम की चाय पर भी और उसके बाद भी.
खाने के कमरे और ड्राइंगरूम की दीवार के बीचोंबीच एक सीधा दरवाजा था जो ड्राइंगरूम में फायरप्लेस के ठीक सामने रखे गए बड़े सोफे की पीठ की तरफ खुलता.
उस अकेले ड्राइंगरूम में तीन और दरवाजे थे और एक खिड़की ठीक बरामदे की तरफ, डेढ़ फुट की ऊँचाई पर. फायरप्लेस की बाईं ओर स्थित दरवाजे से बेडरूम में घुसने पर बाईं ओर बिना दरवाजे वाला ड्रेसिंगरूम था, जिसमें आँगन की तरफ वाली दीवार में पूरी लम्बी खिड़की थी. बड़े से बेडरूम के बीचोंबीच रखे गए पलंग के सिरहाने वाले डंडे में बेडलैंप का लैंप और बटन दोनों लगे हुए थे, जिसे सोने के पहले जयंत बुझा देते.
कृतिका कुनमुनाती-
"अभी नहीं"
"क्यों नहीं?"
पीछे बाक्सरूम की बत्ती रात भर जलती रहती, लकड़ी के दरवाजे की दरार से रोशनी छन-छनकर आती, दीवारों के पार रात धीमे सुरों में गुनगुनाती, पूरा कमरा अपनी दीवारों समेत बीच की जगह में सिमट आता, नई अनजानी अनुभूतियाँ दबे कदमों से खिड़की के पल्ले से झाँकतीं और पूरी की पूरी अंदर आ जातीं. रागिनियों के सुर हवाओं के दामन को धीरे से छूते. उस सहलाहट से भँवरों के केन्द्रक थरथरा उठते, केन्द्रक के बीच का सारा कुछ अनजाना होता. अपरिचिति दूर खड़ी डोलती.
रात अपनी चुप-सी सरगोशियों के साथ आगे बढ़ती हुई बंगले की पूरी छत से लेकर पिछवाड़े के पौधों, बेर की फुनगियों और सामने के आम के तने तक फैल जाती और उन सभी जगहों पर संतुष्टि के वलयों की संरचना करती, साथ ही उन आत्मभ्रमित सी तहों के बीच स्वयं को सहेजती.
हवा में लुका छिपा सुरमई मौसम स्वयं को तराशता.

पेज-22

निश्चिंति से भरी उन रात्रियों में कृति के मन में किसी किस्म की उलझन नहीं उगती, कोई संशय नहीं उभरता. कभी-कभी वह दीवार की चिकनी सतह के पीछे से निकलकर वहाँ दो खिड़कियों के उग आने को देखती. उसे वहाँ पीतल की गोल छड़ों वाली, लकड़ी के पल्लों वाली दो छोटी खिड़कियाँ दिख पड़तीं. सलोनी सुनहली रेशिकाओं के जाल का वातावरण पर छा जाने का गुमान होता. नाइट लैंप का नीला रंग वहाँ कामनाओं की नाईं मचल उठता.

बीतती रात चुपचाप गुजरने लगती. वहाँ छाया मौन पूरे समय निस्तब्धता के बीच बूँद-बूँद कर पिघलने लगता. कृतिका मानों अपने बीच चुके किसी जनम को एक बार ठहरकर निहारती. एक झुरझुरी पैर के अँगूठे के नाखून से शुरू होकर पीठ और कंधों तक फैल जाती सिर के हर बाल की अंतिम नोक तक को अपने में समाहित कर लेती.

“मेरी ओर देखो.”

“ऊँ हूँ.”

कृति की आवाज संवेगों की आवाजाही के बीच लरज उठती.

हथेलियों के बीच चेहरा छिपाए हुए वह पलट जाती. पूरी पीठ और पैरों पर जयंत के बालों का खुरदरा दबाव उसे एक साथ अनंत कामनाओं और कामनाओं की अगाध तृप्ति से भर देता.

बाकी दिनों के ज्यादातर घंटों के ऊपर एक छाया जो अपना पसारा फैलाए रहती, वह थी फोन की घंटी की आवाज.

फोन कभी भी बज उठता.

फोन तो बाद में बजता, डिरेलमेंट होने पर पहले सायरन बजता. सायरन की कर्कश मैटेलिक आवाज बंगले के पूरे वातावरण पर छा जाती. वहाँ उपस्थित नौकरशाही

पेज-23

व्यवस्थित ढंग से अपने अलग-अलग कोनों को छलकाने लगती. एईएन, पीडब्ल्यूआई, ट्रालीमैन, ट्राली ड्राइवर सभी एक साथ मुस्तैदी से भर उठते.

यदि आधी रात में भी सायरन बजता, तब भी जयंत फौरन उठकर दस मिनट में तैयार होकर निकल पड़ते. पैंट, शर्ट, हण्टरबूट पहने, डायरी, छाता हाथ में लिये हुए, चाकचैबंद.

आॅफिस की तरफ वाले गेट से निकलकर वे नीचे खड़ी ट्राली तक जाते, ट्रालीमैन के साथ उस पर सवार हो जाते. ट्राली के स्टार्ट होने की आवाज कृतिका तक चली आती. ‘फट्-फट्’ करती हुई मोटर ट्राली अपने रास्ते चली जाती, कभी नोवामंुडी की तरफ, कभी चाईबासा की तरफ. कभी-कभार यह काफिला इंजन के केबिन में बैठकर भी जाता. लेकिन वे सभी साइट पर जाते जरूर.

कार्यक्रम यही रहता कि डिरेलमेंट साइट पर पहुँचकर वस्तुस्थिति की सही जानकारी कंट्रोल रूम के द्वारा सही जगह, सही व्यक्ति तक पहुँचायी जाए और जरूरी सामान मँगवाकर काम शुरू किया जाए. कभी क्रेन तो कभी स्लीपर की माँग कंट्रोल फोन पर गूँज उठती और काम के शुरुआत की सुनगुन शुरू हो जाती. जब सारा सामान साइट पर पहुँच जाता तब असली काम शुरू होता. गैंगमैन हाथ में गेंता, सब्बल लिए हुए सीधे ट्रैक पर उतर पड़ते और गिरे हुए आयरन, कोयला या स्वयं वैगन को ही हटाने में लग जाते.

ट्रैक सफाई के बाद पटरी बदलने की बारी आती.

ट्रैक फिटिंग का काम शुरू हो जाता. लाइन की दुरुस्ती हो जाने पर अगली गाड़ी या सिर्फ इंजन को उसी ट्रैक पर चला लेने के बाद ही जयंत साइट से हटते.
यह किस्सा हर महीने तकरीबन दो बार स्वयं को दुहराता. कभी अल्लसुबह, कभी भरी दुपहरिया में, तो कभी गई रात में.
बुधवार रात के दो बजे फोन की घंटी बजी थी. जयंत की नींद पहले खुली.
"यस, थ्री जीरो वन फाइव."

पेज-24
मिड सेक्शन में हुए डिरेलमें की खबर सुन सायरन होर्न बज उठता था.
कृतिका की नींद सायरन की तीसरी बोली पर खुली थी.
"क्या हुआ?"
जयंत बाथरूम से पैंट बनियान पहने निकल रहे थे.
"मिड सेक्शन डिरेलमेंट क्या होता है?"
"दो स्टेशन के बीच पाँच लोडेड बाक्स वैगन गिर गए हैं."
"बाक्स वैगन क्या होता है? वह उठेगा कैसे?"
"क्रेन आएगा डिवीजन से."
"डिवीजन मतलब....."
जयंत कमीज पहन चुके थे, वे बिस्तर के बिलकुल करीब चले आए, कृति के दोनों कंधों पर हाथ रखकर धीरे से दबाया-
"मतलब कि तुम सो जाओ मैं जा रहा हूँ, साइट पर."
कृति की नींद उड़ चुकी थी.
उसने बिस्तर से उठकर नाइट माऊन की डोरी कमर पर कसी.
आधी रात में आॅफिस की तरफ खुलने वाले गेट पर खड़ी कृति ने नीचे पटरी पर खड़ी ट्रोली पर जयंत को सवार होते हुए देखा. पूरा डोंगापोसी सन्नाटे की चादर तले सो रहा था, दूर खड़े पहाड़ तक नींद से भरे हुए थे. नीचे पटरियों पर फेयर माण्ट इंजन के बल पर ट्राली, दोनों हेड लाइट्स को चमकाते हुए फट्-फट् करती दौड़ रही थी.

पेज-25
ऊपर आसमान में लटका हुआ अकेला चाँद था. वह अपने पीले मुखड़े से एक ऐसी आकृति को निहार रहा था, जो आधी रात सुख की नींद सोए हुए प्रिये संगी को बेवजह ड्यूटी पर जाते हुए देख रही थी.
लेकिन जयंत का इस तरह नींद से उठकर जाना बेवजह नहीं था, इन सभी बातों की वजह तो थी!
व्जह देश की ब्यूराक्रैटिक भाग्य रेखा पर खिंची हुई किसी पुराने स्कटिश बिजनेस की एक सदी पुरानी धड़कती हुई नब्ज थी, जो बी.एन.आर. की हर वजह की जड़ में थी. कृति उस नब्ज की धड़कन से परिचित न थी, यह और बात थी. लेकिन प्रशासन को तो पता था कि उसकी तर्जनी के इशारे पर एईएन की हर चाल तय है और एईएन को भी यह पता था कि आगे के प्रशासनिक जीवन की हर लकीर कहाँ से जुड़ी होती है.
कृति आधी रात में गेट पर खड़ी नीचे ट्राली की फटफटी को जाते हुए देखती रही.
अगले डिरेलमेंट ने दिवस और रात्रि की चक्रायित गति के बीच बदामपहाड़ स्टेशन से दो किलोमीटर पर अपनी

जगह बनाई.
वे गर्मियों के शुरुआती दिन थे.
उन्हीं दिनों के बीच अचानक कृतिका को बुखार आ गया. एक सौ दो डिग्री.
“बदामपहाड़ में गाड़ी गिरा है, साहब गया है.”
स्टडी रूम और ड्राइंग रूम के बीच खुलने वाले दरवाजे में पर्दे के पास खड़े जाधो को उसने देखा.
बिस्तर के नजदीक जमीन पर बैठी बाई ने दुहराया-
“साहब गिआ है. हाम दो दिन से इहँई है, आपका पास.”

पेज-26
उस दरमियान जाधो बार-बार दवा लाता रहा था. बाई उसे दवा-पानी समय से देती रही थी, बातीं भी.
चैथे दिन बुखार उतरने पर कृतिका बिस्तर पर उठकर बैठी. दूध मिली मिली वाली पीते हुए उसने बीत चुके दिनों के हिसाब को सुना-
“आप तो बुखर में पड़ा रहा. साहब जाने समय बोला रहा आपका दवा लाने को. हाम जाकर ई बाई को भी बुला लाया.”
जाधो ने बाई के सामने ही पूरी कहानी सुना डाली-
“हाम आईओडब्ल्यू को बोला कि उसी बुड्ढी को भेजो, जो पहले का मेम साहब का बच्चा पकड़ने जाता रहा.”
“वो आॅफिस का बाबू तो बहाना करता रहा. बोलता रहा कि जानता नहीं कोन बाई. कोई दूसरा बाई को ले जाओ.”
“हाम बोला कि ले जाएगा तो बस उसी को. नाहिं भेजेगा तो सिकायत करेगा. तुमको डाँट पड़वाएगा.”
“जब डांट का बात सुना तो ई बाई को भेजा. इहाँ का लोग ऐसा ही है.”
“इहाँ सबका मन अईसा ही है, जब डाँट का बात सुनेगा तो डेराएगा, नाहि तो बस अपना अकड़ में रहेगा.”
पूरे दौरान वह बुड्ढ़ी बाई निर्विकार बैठी रही.
“साहब कब आएंगे?”
कृति ने अपनी कमजोर आवाज की गूँज मसहरी के डंडे पर प्रतिध्वनित होते हुए सुनी.
“हाम तो बोलता है कि छै दिन लगेगा. बहुत गाड़ी गिरा है बत्तीस वैगन. आप देख लीजिएगा पाँच-छै दिन लगेगा.”

पेज-27
कृति सिर पीछे टिकाकर तकिए पर सरक गई.
“छह दिन.”
उस पूरे सप्ताह पूरे देश में फैली पटरियों के किनारे खड़े कई स्टेशनों पर लोडिंग का काम निर्बाध रूप से चला था. सवारी गाड़ियाँ जम्मू से लेकर कन्याकुमारी और द्वारका से डिब्रूगढ़ तक सरपट दौड़ती रही थीं.

कृति अकेले कमरे में बीमार पड़ी रही.

—